
मनसा सेवा - 38

➤➤ चार प्रकार की सेवा

➤➤ _ ➤➤ स्व सेवा

→ सबसे पहला रहम स्वयं पर करना है

→ दो विधियां

■ अटेंशन

■ चेकिंग

➤➤ _ ➤➤ विश्व सेवा

➤➤ _ ➤➤ यज्ञ सेवा

➤➤ _ ➤➤ मनसा सेवा

➤➤ स्व सेवा कैसे करें ? हम पुरुषार्थ में सो न जाएँ ? निरंतर जागरण की अवस्था कैसे रहे ?

➤➤ _ ➤➤ Time Management

→ ज्ञान योग के उपयुक्त समय

→ check करें कहाँ कहाँ समय व्यर्थ जा रहा है ?

➤➤ _ ➤➤ दृढ़ता से आगे बढ़ें

➤➤ _ ➤➤ स्वयं को बार बार स्वयं के लक्ष्य की स्मृति दिलाएं ?

→ आखिर क्यों आपने सारा संसार छोड़ दिया था ?

➤➤ _ ➤➤ अपने मन को सदैव बिजी रखिये

→ मन बुधी का टाइम टेबल बनाइये

➤➤ _ ➤➤ श्रेष्ठ पुरुषार्थियों का संग करें

→ जो निरंतर अध्यन्नशील है

→ जहां पुरुषार्थ के प्रति जागरण का भाव नहीं है... वह कुसंग है

➤➤ _ ➤➤ स्वयम से बातें करें

→ कब कब गिरे और क्यों गिरे ?

→ बार बार एक गलती नहीं दोहरा रहे ?

➤➤ _ ➤➤ शारीरिक उम्र को आड़े न आने दें

→ ब्रह्मा बाबा ने 60 साल की उम्र के बाद 33 साल तक पुरुषार्थ किया

➤➤ _ ➤➤ आशा कभी नहीं छोडनी है

→ निराशा को जीवन में बिलकुल भी स्थान नहीं देना है

➤➤ _ ➤➤ जो बीता वो ड्रामा

→ अब आगे की सोचो

➡_➡ रोजाना पूरे Interest से पढाई पढ़नी है

Avyakt Murli Reference :- Page Number 28 Of Mansa Sewa Book
